Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB, 2021, VOL- 8/63

अंग्रेजी व्याकरण एवं रचनावादी शिक्षण की प्रासंगिकता

देवेन्द्र कुमार यादव

शोध छात्र, शिक्षा विद्यापीठ. महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र

Email: devendrayadav2514@gmail.com

Paper Received On: 21 FEB 2021

Peer Reviewed On: 28 FEB 2021

Published On: 1 MAR 2021

Abstract

वर्तमान समय में जिस प्रकार से विद्यालयों में विद्यार्थी बेमन से शिक्षण पाते हैं वह उनको सीखने में और समझ पैदा करने में सक्षम नहीं हैं । विद्यालय में अध्यापकों को पाठ्यक्रम पूरा करना होता है, इसलिए मशीनीकृत तरीके से अध्ययन-अध्यापन होता है लेकिन वहां सीखना नदारद ही रहता है । विद्यार्थी कक्षा में बैठे रहते हैं । उन्हें अपने विचारों को कक्षा में व्यक्त करने एवं प्रश्न पूछने की भी स्वतंत्रता नहीं होती है । हम यह कह सकते हैं विद्यालय का अर्थ ही यह लगा लिया गया कि जहाँ अध्यापक एवं पुस्तकें ही सब कुछ हैं, पुस्तकों में जो कुछ भी लिखा गया है वह पत्थर की लकीर है । जो पुस्तक में लिखा गया है उसी भाषा में अध्यापक कक्षा में सम्प्रेषण करने के लिए विवश है । विद्यार्थियों को जो आनंद खेलने में आता है वैसा कक्षा में पढ़ते समय क्यों नहीं आता? विद्यार्थी अपने आसपास की वस्तु को लेकर आश्चर्य करता है, वैसा आश्चर्य विद्यालय की कक्षा में क्यों नहीं करता है ? इन प्रश्नों का उत्तर हमारी शिक्षण-प्रक्रिया से ही मिलता है । शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाना होता है । यह तभी संभव है जब शिक्षण नियोजन में ऐसी व्यूह रचनाओं का समावेश हो जिससे विद्यार्थी में जिज्ञासा बनी रहे । इसलिए हमें नवाचारी शिक्षण पद्धति का अनुप्रयोग करना चाहिए । नवाचारी शिक्षण पद्धति में रचनावादी शिक्षण का सबसे प्रमुख स्थान है । विभिन्न विषयों में जैसे विज्ञान, गणित में रचनावादी शिक्षण का सकारात्मक परिणाम रहा है । इसी तरह यदि अंग्रेजी व्याकरण रचनावादी शिक्षण के माध्यम से पढ़ाया जाए तो लाभदायक सिद्ध होगा । अंग्रेजी शिक्षण एवं रचनावादी शिक्षण से संबंधित शोध में कोकसाल (2009), यिजीत (2011), नोघाभी और अशरफ (2017), बाड़ोला (2017), शर्मा एवं पूनम (2017), रामदास और शर्मा (2018) ने रचनावादी उपागम के प्रभावशीलता का अध्ययन किया । जिसमें उन्होंने ने पाया कि रचनावादी उपागम का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है । अतः प्रस्तुत शोध पत्र में अंग्रेजी व्याकरण शिक्षण में रचनावाद के शैक्षिक महत्व का उल्लेख किया गया है ।

प्रमुख प्रत्यय/ शब्दावली : *रचनावादी शिक्षण, नवाचार एवं अंग्रेजी व्याकरण ।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

आधुनिक युग विज्ञान, सूचना तकनीकी तथा परिवर्तन का युग है । इस विकासशील युग में शिक्षण सिद्धांतों तथा शिक्षण व्यवस्था के प्रति पुरानी धारणाएं शिथिल पड़ रही हैं । अभिनव प्रयोग को सर्वाधिक उपयुक्त शिक्षण पद्धति माना जाने लगा है । वर्तमान में शिक्षण प्रक्रिया को सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप से कला व विज्ञान दोनों ही रूपों में मान्यता प्राप्त है । आज बालकेन्द्रित शिक्षा प्रणाली में बालक की अभिरुचि, मनोवृत्ति, शारीरिक एवं मानसिक क्षमता के अनुरूप ही शिक्षण कार्य सम्पादित करना उचित होता है । अपारम्परिक शिक्षण साधनों के बढ़ते चरण

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व लोकप्रियता के फलस्वरुप शिक्षक को अपनी भूमिका बरकरार रखने हेतु शिक्षण पूर्व तैयारी करना आवश्यक है । पूर्व में ही विचार मंथन से कक्षा शिक्षण सुगमतापूर्वक सम्पन्न होता है व भटकाव की स्थिति नहीं आती है (सक्सेना, 2013) । आज शिक्षण प्रक्रिया में नवाचार न केवल युग की मांग है, अपितु बालक-अधिगम प्रक्रिया की एक अनिवार्यता भी है । शिक्षण-प्रशिक्षण प्रक्रिया में भावी शिक्षकों को इसका ज्ञान व प्रगोग अवश्यंभावी है । "नवाचार एक नूतन विचार का प्रारंभ है । यह एक प्रक्रिया है या तकनीकी है, जिसका विस्तृत उपयोग प्रचलित व्यवहारों तथा तकनीक के स्थान पर किया जाता है । यह परिवर्तन के लिए परिवर्तन नहीं है, वरन इसका क्रियान्वयन और निर्माण परीक्षण तथा प्रयोगों के आधार पर किया जाता है" (यूनेस्को सम्मेलन, 1971) । नवाचार में उन पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है जो वैज्ञानिक अध्ययन का फल होती हैं और जिनका उद्देश्य लक्ष्य तथा साधन के बीच सर्वोपयुक्त सामंजस्य स्थापित करना तथा यह सुनिश्चित करना होता है कि प्रत्येक प्रयत्न से सर्वाधिक फल मिले । इसी भांति शैक्षिक नवाचार को शैक्षिक परिवर्तन के महत्वपूर्ण घटक के रूप में, नए तत्व के समावेश के रूप में एक प्रेरक शक्ति एवं सुस्थापित व परंपरागत रूप से व्यावहारिक राय के रूप में परिभाषित किया जाता है । दूसरे शब्दों में कहा जाए तो शिक्षक को अपने काम में सुधार की ललक, शिक्षा स्तर उन्नयन करने की उनकी जीवन अभिलाषा ही नवाचार की ओर प्रेरित करती है । दृढ इच्छा शक्ति तथा निश्चय ही नवाचार की रीढ़ है । इस प्रकार शैक्षिक नवाचार शैक्षिक प्रगति का रथ माना जा सकता है । शैक्षिक नवाचार शिक्षक को इस बात में सहायता करते हैं कि उनका प्रयत्न व्यर्थ न जाए । शिक्षण शास्त्रीय नवाचार में रचनावाद सबसे प्रसिद्ध उपागम है । रचनावादी उपागम में शिक्षक के द्वारा विद्यार्थियों के लिए ऐसा वातावरण एवं परिस्थितियाँ उत्पन्न की जाती है जहाँ ज्ञान का सृजन भयमुक्त वातावरण में स्वतंत्रतापूर्वक होता है । जिसमें विद्यार्थी अपने पूर्व अनुभव को उस परिस्थिति से जोड़कर ज्ञान प्राप्त करता है । यदि वह गतिविधियों द्वारा ज्ञान का निर्माण करता है, तो उसे आनंद की अनुभूति होती है और उसका ज्ञान एवं सीखना स्मृति में स्थाई हो जाता है एवं उसका प्रयोग वह विभिन्न परिस्थितियों में करता है । रचनावाद के अनुसार शिक्षक को ही ज्ञान का प्रमुख आधार नहीं माना जाता है, क्योंकि शिक्षक का कार्य विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान करना होता है । जिससे विद्यार्थी स्वयं अपने ज्ञान का सृजन कर सके । एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार विद्यार्थियों को ज्ञान की घुट्टी पिलाने के बजाय उसे ज्ञान का सृजक बनाया जाए । विद्यालय में बच्चे का सम्मान हो, उसकी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर सीखने की प्रक्रियाओं को संचालित किया जाए । प्रायः देखा जाता है कि आम दिनचर्या में, विद्यालय से बाहर हम बच्चों की जिज्ञासा, खोजी व लगातार प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति का आनंद लेते हैं । बच्चे अपने आस-पास की दुनिया से बहुत ही सक्रिय रूप से जुड़े रहते हैं । वे खोज-बीन करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, चीजों के साथ कार्य करते हैं, विभिन्न चीजें बनाते हैं और अर्थ गढ़ते हैं, बचपन का विकास एक निरंतर बदलाव की अवस्था है जिसमें शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं का पूर्ण विकास शामिल होता है । इस विकास में व्यस्क समाज में समाजीकृत होना भी शामिल है जिसमें बालक संसार क ज्ञान ग्रहण करता है और नए ज्ञान का सृजन भी करता है । बच्चा अपने आपको दूसरे से जोड़कर देखना सीखता है जिससे उनकी समझ बनती है तथा वह कार्य कर पाता है । समाज की हरके नयी पीढ़ी को विरासत में संस्कृति

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

एवं ज्ञान का एक भंडार मिलता है, जिसे वह अपनी गतिविधियों तथा समझ से समाहित करते हुए नया ज्ञान रचने की सार्थकता महसूस करता है ।

रचनावादी शिक्षा की प्रकृति

रचनावाद सीखने का एक दर्शन है यह जानने और समझने का दर्शन है । यह शिक्षक के लिए मार्गदर्शन का कार्य करता है। रचनावाद की मूल भावना है कि बालक को स्वयं एवं विश्व की समझ अनुभव के आधार पर होती है । इस प्रक्रिया में नवीन अनुभव और पूर्व अनुभव मिलकर नवीन अर्थ का निर्माण करते हैं । रचनावाद वह सक्रिय प्रविधि है जिसमें छात्र नवीन विचारों तथा नवीन संप्रत्ययों का निर्माण करते हैं । सीखना संवेदी अंगों से होता है जैसे- छूने, आभास करने, देखने, अवलोक एवं सुनने से । अतः स्पष्ट है निष्क्रियता से ज्ञान का निर्माण नहीं किया जा सकता है। रचनावादी शिक्षा के स्वरुप में सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण को भी महत्व दिया गया है । जॉन डीवी ने शिक्षा को कार्य पर निर्भर बताया और कहा कि ज्ञान एवं विचार उन परिस्थितियों से प्रकट होते हैं जिनसे छात्र अनुभव प्राप्त करते हैं । जॉन डीवी ने क्रिया करके सीखना, पूर्व ज्ञान को नवीन अनुभवों से जोड़कर अर्थ निकालना तथा सीखने में सामाजिक सन्दर्भ के महत्व को स्वीकार किया है । इसी तरह जीन पियाजे का भी मत है कि मानव एक तार्किक संरचना के निर्माण के बाद दूसरी संरचना करते हैं और खोज विधि से अर्थ ढूढ़ने की सामान्य विधि है उनका मत है कि छात्र द्वारा ज्ञान आत्मीकरण किया जाता है । वायगोटत्सकी का रचनावादी सिद्धांत सामाजिक रचनावाद के नाम से प्रसिद्ध है । इनका मानना था अधिगम एवं विकास एक साथ घटित होता है । जिससे बच्चों का संज्ञानात्मक विकास समाजीकरण एवं शिक्षा के सन्दर्भ में होता है । बच्चों को प्रत्यक्षीकरण, ध्यान और उनकी याददाश्त की क्षमता उनके उनके संज्ञानात्मक उपकरणों के द्वारा परिवर्तित होती है । ये संज्ञानात्मक उपकरण संस्कृति के द्वारा जैसे इतिहास, समाज, परम्पराएं, भाषाएँ और धर्म होते हैं । बच्चा पहले सामाजिक वातावरण के संपर्क में आता है, इसके बाद पारस्परिक स्तर पर एवं बाद में उसको आत्मसात कर, अनुभव प्राप्त करता है । प्रारंभिक और नए अनुभव बच्चे को प्रभावित करते हैं, जिससे वे बाद में नए विचारों को सुगमता से निर्मित कर लेते हैं । चूँकि इनकी रचनावाद की सार्थकता संस्कृति एवं समाज के सन्दर्भ में है, इसलिए इनका रचनावाद सामाजिक रचनावाद कहलाता है । इनके अनुसार रचनावादी अधिगम वातावरण विद्यार्थी को एकत्रित करने तथा प्रतिक्रिया करने को अभिप्रेरित करता है । इस प्रकार हम पाते हैं कि रचनावादी शिक्षाशास्त्र निर्माण का शिक्षाशास्त्र है इसका प्रारम्भ बालक की आवश्यकताओं से होता है तथा उसे स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए और सृजनात्मकता के लिए उचित वातावरण उपलब्ध कराया जाता है ।

भाषा एवं रचनावाद

भाषा मानव जीवन में एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है जिसके माध्यम से मानव अपने विचारों, विश्वासों, संवेगों, संदेहों तथा भावनाओं को व्यक्त करने में समर्थ है । भारतीय तथा पाश्चात्य दार्शनिकों ने कई महत्त्वपूर्ण सिद्धांत दिए हैं जो भाषा के स्वरुप, संरचना तथा कार्य को स्पष्ट करते हैं । शब्द के स्वरुप, शब्दार्थ संबंध, वाक्य संरचना इत्यादि दृष्टियों से दिए गए विभिन्न मत भाषा-शिक्षण में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं तथा इन सिद्धांतों की सार्थकता इस बात

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

से सिद्ध होती है कि वर्तमान समय में भाषा शिक्षण भाषा की संरचनात्मकता को प्राथमिकता देकर उसके एकार्थक स्वरुप पर बल देता है । भाषा की स्पष्टता तथा संक्षिप्तता अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है । फलस्वरूप अपेक्षा यह की जाने लगी है कि भाषा भी गणित के समान नपी-तुली संरचनायुक्त हो तथा इसे निर्धारित सूत्रों के माध्यम से अधिगत किया जा सके । परिणामतः भाषा शिक्षण के समय शिक्षक भी अक्षरों, शब्दों तथा वाक्यों की नपी-तुली संरचना के द्वारा भाषा सिखाता है । जिससे उसे सरलता से सीखा जा सके, किन्तु इस प्रक्रिया में भाषा के द्वारा भावाभिव्यक्ति तथा भाव-सम्प्रेषण का अनूठा रचनात्मक पक्ष उपेक्षित रह जाता है । अतः भाषा को उसकी विशिष्टताओं के साथ सिखाकर ही भाषा शिक्षण को सार्थक बनाया जा सकता है । आज के भाषा शिक्षण में ऐसे सन्दर्भों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना एक सार्थक प्रक्रिया है । भाषा शिक्षण केवल भाषा की कक्षा तक ही सीमित नहीं होता है, बल्कि विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं गणित की कक्षाएं भी एक तरह से भाषा की ही कक्षा होती है । किसी विषय को सीखने का मतलब है उसकी अवधारणाओं को सीखना, उसकी शब्दावली को सीखना, उनके बारे में आलोचनात्मक ढंग से चर्चा करना और उनके बारे में लिख सकना । साथ ही साथ भाषा की शिक्षा कुछ अनूठे अवसर उपलब्ध कराती है । कहानी, कविता, गीतों और नाटकों के माध्यम से बच्चे अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ते हैं और इससे उनकों अपने अनुभव विकसित करने और दूसरों के प्रति संवेदनशील होने के अवसर मिलते हैं । हम यह भी ध्यान दिला दें कि बच्चे इस प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से व्याकरण भी अधिक आसानी से सीख सकते हैं न कि उबाऊ व्याकरण शिक्षण विधि से (एन.सी.एफ. 2005) ।

अंग्रेजी व्याकरण शिक्षण एवं रचनावाद

भारत के बहुभाषी समाज में अंग्रेजी एक वैश्विक भाषा है । यहाँ अंग्रेजी शिक्षण में विविधता की स्थिति दो कारणों से है, एक शिक्षकों की अंग्रेजी दक्षता और विद्यार्थियों का विद्यालय से बाहर अंग्रेजी भाषा से सामना । परंपरागत रूप से अंग्रेजी व्याकरण का अध्ययन अनुवाद पद्धति से होती थी । पाचवें दशक के उत्तरार्द्ध में अंग्रेजी शिक्षण की सरकारी व्यवस्था में संरचनात्मक रूप से स्तरीकृत पाठ्यक्रम को लागू किया गया जो एक मुख्य नवाचारी कदम था (प्रभु, 1987:10) । यह सोचा गया की भाषा का शिक्षण उसकी सामग्री के नियोजन को व्यवस्थित करके किया जा सकता है जैसे कि अंकगणित या भैतिकी की पढाई में किया जाता है । (कभी-कभी यह संरचनात्मक दृष्टिकोण सीधे लागू कर दिया जाता था जैसे मात्र अंग्रेजी भाषी कक्षाओं पर जोर देकर) । तथापि सातवें दशक के उत्तरार्द्ध में संरचनात्मक विधि के व्यवहारवादी-मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक आधारों ने भाषा को 'मानसिक अंग' समझने वाले चामस्की के संज्ञानात्मक दावे को बढ़ावा दिया । अंग्रेजी शिक्षण पेशे के लोगों में भी संरचनात्मक विधि के प्रति असंतोष था क्योंकि यह विधि कक्षाओं में शुद्ध वाक्य बनाने की योग्यता के बावजूद शिक्षार्थियों की भाषा को वास्तविक परिस्थितियों में व्यवहार करने या बढ़ सकने की योग्यता नहीं दे पाती थी । यह यह बाद में समझ में आया कि कक्षाओं में प्रयोग किया जाने वाला संरचनात्मक दृष्टिकोण भाषा की संरचना और कुशलता जैसे दो खण्डों में तोड़कर सोच में एक बिखराव और हल्कापन लाता था । भाषा की संरचना केंद्रित शिक्षा ने शिक्षार्थी की 'भाषाई उम्र' और 'मानसिक उम्र' के अंतर को इतना बढ़ा दिया कि मानस को भाषा से बाँधे रख पाना संभव नहीं हो पाता

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

था । अतः अर्थपूर्ण सन्दर्भों में भाषा-प्रयोग सिखाने पर बल दिया जाने लगा । ब्रिटिश भाषाविदों का कहना है कि भाषा प्रयोग में व्याकरणिक दक्षता के अलावा कुछ और भी शामिल होता है । इस अतिरिक्त आयाम को बताने के लिए 'सम्प्रेषण दक्षता' पद का प्रयोग किया गया । अतः सम्प्रेषण दक्षता हासिल करने की कोशिश व्याकरणिक दक्षता के आधार पर हो सकती है (आधार पत्र, 2012) । अंग्रेजी व्याकरण जैसे नीरस विषय को यदि रुचिकर एवं विभिन्न रचनावादी शिक्षण रणनीतियों जैसे समस्या आधारित अधिगम (Problem Based learning), खोज अधिगम (Discovery learning), सहकारी अधिगम (Co-operative learning) स्वनियमन अधिगम (Self-Regulatedlearning), मस्तिष्क उद्वलन (Brain Storming), संज्ञानात्मक प्रशिक्षुता (Cognitive Apprentice), वाद-विवाद (Debate), वृत्त विधि (Case Method) के माध्यम से शिक्षण किया जाए तो विद्यार्थियों की उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ सकता है । पूर्ववर्ती शोधों में अंग्रेजी व्याकरण से सम्बंधित जो शोध हुए हैं जैसे शोध में कोकसाल (2009), यिजीत (2011), नोघाभी और अशरफ (2017), बाड़ोला (2017), शर्मा एवं पूनम (2017), रामदास और शर्मा (2018) ने रचनावादी उपागम के प्रभावशीलता का अध्ययन किया । जिसमें उन्होंने ने पाया कि रचनावादी उपागम का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है । अतः हम कह सकते यदि अंग्रेजी व्याकरण को रचनावादी शिक्षण रणनीतियों के माध्यम से पढ़ाया जाए तो विद्यार्थियों की उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा ।

शैक्षिक निहितार्थ

उक्त सभी सन्दर्भों पर चिंतन करने से यह ज्ञात होता है कि वर्तमान समय में भाषा शिक्षण हेतु परंपरागत प्रतिमानों को परिमार्जित करना आवश्यक है । शिक्षक को शिक्षण अधिगम पद्धतियों में रचनावादी पद्धतियों के अनुसार परिवर्तन करना चाहिए । सक्रियता, सामाजिकता, संदर्भों, सम्प्रेषण एवं सहयोगात्मक संप्रत्ययों के अभाव में अधिगमकर्त्ता के अनुभव सार्थक नहीं हो सकते और ज्ञान की निर्मिति कभी निरथर्क नहीं होती है । फलस्वरुप हमें मुक्त मन एवं ह्रदय से रचनावादी पद्धतियों को अपनी वर्तमान शिक्षण व्यवस्था में बिना पूर्वाग्रह के समुचित एवं सम्मानजनक स्थान देने का प्रयास करना चाहिए । हमारे विद्यालयों में अधिगम प्रक्रिया इस प्रकार होनी चाहिए कि विद्यार्थी स्वयं अपने अनुभवों के आधार पर ज्ञान निर्माण कर सके । राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण माध्यमिक स्तर एवं असर रिपोर्ट प्राथमिक स्तर इस बात की ओर इशारा करते हैं कि अंग्रेजी भाषा में निम्न स्तर का अधिगम है । आधार पत्र में अंग्रेजी शिक्षण हेतु रचनावादी उपागम का सुझाव दिया गया है । हम देखते हैं कि अधिकांश राज्य बोर्ड के विद्यार्थियों की अंग्रेजी विषय में उपलब्धि निम्न स्तर की होती है । जिसका मुख्य कारण अध्ययन एवं अध्यापन प्रणाली है । इसलिए यदि रचनावादी उपागम से शिक्षण किया जाए तो यह अंग्रेजी विषय हेतु लाभकारी सिद्ध हो सकता है ।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सन्दर्भ

एन्युअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशनल रिपोर्ट 2018.

बाड़ोला, के. (2018). करेक्टरिस्टिक ऑफ कन्सट्रक्टिविस्ट क्लासरूम ऑफ इंग्लिश एजुकेशन. शिक्षा शोध मंथन, 4(1), 180-185.

कोकसाल, एच. ओ. (2009). टीचिंग टेंसेस इन इंग्लिश टू द स्टूडेंट्स ऑफ द सेकेंड स्टेज एट प्राइमरी एजुकेशन थ्रू यूजिंग 5E मॉडल इन कन्सट्रक्टिविस्ट एप्रोच. अप्रकाशित पी-एच.डी. शोध प्रबंध. डिपार्टमेंट ऑफ टर्किश लैंगवेज़, सेलकुक यूनिर्वसीटी, केन्या.

कटारा, आर. एवं मित्तल, डी. के. (2012). निर्मितवादी अधिगम एवं पद्धतियाँ एवं उनकी प्रासंगिकता. एडूसर्च जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च. 3(2), 154-155.

एन.सी.ई.आर.टी. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा-2005. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.)

एन.सी.ई.आर.टी. (2018). राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.)

नोघाभी, एन.जी., एवं अशरफ, एच. (2017). इफेक्ट ऑफ इंप्लीमैनटेशन ऑफ E5 टीचिंग मॉडल ऑन इरानियन ई.एफ़.एल. लरनर्स लिशनिंग एंड स्पीकिंग स्किल्स. इ- प्रोसीडिंग ऑफ द 5th ग्लोबल सम्मिट ऑन एजुकेशन जीएसइ. Organized by http://worldconferences.net/

रामदास, वी. और शर्मा,जे. (2018). इफैक्ट ऑफ कन्सट्रकटिविस्ट एप्रोच बेस्ड टीचिंग स्ट्रेटजी ऑन स्टूडेंट्स लिशिंनिंग स्किल इन इंग्लिश एट सेकेंडरी लेवल.इंटरनेशनल इनवेंटिभ मल्टीडीसीप्लिनरी जर्नल, 6 (2), 118-124

सक्सेना, आर. (2013). नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी.

यिजीत, सी. (2011). दी इफेक्ट ऑफ ऑफ 5E टीचिंग मॉडल इन राइटिंग ऑन अचिवमेंट एंड मोटीवेशन. मास्टर थेसिस. फारेन लैंगवेज टीचिंग डिपार्टमें, टर्की यूनिर्वसीटी, टर्की.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies